Downloaded from www.studiestoday.com

गद्यांश पर आधारित अर्थ–ग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर

नमक का दारोगा

मुंशी प्रेमचंद

1. धर्म की इस बुद्धिहीन दृढ़ता और देव–दुर्लभ त्याग पर मन बहुत झुंझलाया। अब दोनों भाक्तियों में संग्राम होने लगा। धन ने उछल–उछलकर आक्रमण करने भुरू किए। एक से पाँच, पाँच से दस, दस से पंद्रह, और पन्द्रह से बीस हजार तक नौबत पहुँची, किन्तु धर्म अलौकिक वीरता के साथ इस बहुसंख्यक सेना के सम्मुख अकेला पर्वत की भाँति अटल, अविचल खड़ा था।

प्रश्न 1. धर्म को बुद्धिहीन तथा देव–दुर्लभ त्याग क्यों कहा गया है?

उत्तरः– धर्म धन की असीम भाक्ति को नहीं जानता है। मुंशी वंशीधर, अलोपीदीन के धन की भाक्ति का अंदाज नहीं लगा पाए थे। उन्हें पता नहीं था कि धन के सन्मुख सभी नतमस्तक हो जाते हैं। यहाँ तक कि देवता भी इसका त्याग सरलता से नहीं कर पाते। इसलिए धर्म (वंशीधर) को बुद्धिहीन तथा देव–दुर्लभ त्याग कहा गया है।

प्रश्न 2. धर्म किस प्रकार धन की सेना के सामने डटा रहा?

उत्तरः– धर्म (वंशीधर) अलौकिक वीरता के साथ धन (अलोपीदीन) की बड़ी सेना के सामने अकेला पर्वत के समान अटल अविचल डटा रहा अर्थात् वंशीधर पर पंडित अलोपीदीन द्वारा दिए गए प्रलोभनों का कोई असर नहीं हो रहा था।

प्रश्न 3. ''दोनों भाक्तियों में संग्राम होने लगा'' से लेखक का क्या अभिप्राय है?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

उत्तरः– धर्म और धन को लेखक ने दो भाक्तियों के रूप में पहचान की है। वंशीधर धर्मशक्ति के प्रतीक हैं तो अलोपीदीन धन की भाक्ति के। दोनों एक दूसरे पर विजय प्राप्त करने के लिए संघर्श करते हैं।

धन अर्थात् अलोपीदीन ने धर्म अर्थात् वंशीधर पर रिश्वत की राशि बढ़ा–बढ़ाकर तेजी से आक्रमण करने लगे। किन्तु वंशीधर पर इसका कोई असर नहीं पड़ा।

2. बिछड़न–समय बड़ा करुणोत्पादक होता है। आपको बिछड़ते देखकर आज हृदय में बड़ा दुख है। माइ लॉर्ड! आपके दूसरी बार इस देश में आने से भारतवासी किसी प्रकार प्रसन्न न थे। वे यही चाहते थे कि आप फिर न आवें। पर आप आए और उससे यहाँ के लोग बहुत ही दुखित हुए। वे दिन–रात यही मनाते थे कि जल्द श्रीमान् यहाँ से पधारें। पर अहो! आज आपके जाने पर हर्ष की जगह विषाद होता है। इसी से जाना कि बिछड़न–समय बड़ा करुणोत्पादक होता है, बड़ा पवित्र, बड़ा निर्मल और बड़ा कोमल होता है। वैर–भाव छूटकर शांत रस का आविर्भाव उस समय होता है।

प्रश्न 1. बिछड़न–समय से क्या आशय है? वह करुणोत्पादक क्यों होता है?

उत्तरः– बिछड़न–समय का आशय है–अलग होने का अवसर, विदाई का समय। एक–दूसरे से अलग होने का समय करुणा उत्पन्न करने वाला होता है क्योंकि विदाई में एक दूसरे से अलग होने की व्यथा होती है।

प्रश्न 2. बैर–भाव छूटकर भाांत रस का आविर्भाव कब और क्यों होता है?

उत्तरः– विदाई के समय भात्रुता का भाव समाप्त हो जाता है। पहले के समस्त गिले–शिकवे दूर हो जाते हैं क्योंकि व्यक्ति सोचता है कि यह तो अब यहाँ से जा रहा है, इससे वैर–भाव रखने से कोई लाभ नहीं है। वह पिछले कटु–अनुभवों को भुला देता है।

प्रश्न 3. भारतवासी किसके दूसरी बार भारत आने से अप्रसन्न थे? वे दिन–रात क्या दुआ मनाते थे और क्यों?

उत्तरः– भारतवासी लार्ड कर्जन के दुबारा वायसराय बनकर भारत आने से अप्रसन्न और दुखित थे। वे भगवान से दिन–रात यही दुआ मनाते थे कि लार्ड कर्जन भारत पुनः न आएँ क्योंकि उनके पहले कार्यकाल में भारतीयों ने उनकी क्रूर नीतियों के कारण बहुत दुख भोगे थे।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

3. किताबों की विद्या का ताप लगाने की सामर्थ्य धनराम के पिता की नहीं थी। धनराम हाथ–पैर चलाने लायक हुआ ही था कि बाप ने उसे धौंकनी फूँकने या सान लगाने के कामों में उलझाना शुरू कर दिया और फिर धीरे–धीरे हथौड़े से लेकर घन चलाने की विद्या सिखाने लगा। फर्क इतना ही था कि जहाँ मास्टर त्रिलोक सिंह उसे अपनी पसंद का बेंत चुनने की छूट दे देते थे वहाँ गंगाराम इसका चुनाव स्वयं करते थे और जरा–सी गलती होने पर छड़, बेंत, हत्था जो भी हाथ लग जाता उसी से अपना प्रसाद दे देते। एक दिन गंगाराम अचानक चल बसे तो धनराम ने सहज भाव से उनकी विरासत सँभाल ली और पास–पड़ोस के गाँव वालों को याद नहीं रहा वे कब गंगाराम के आफर को धनराम का आफर कहने लगे थे।

प्रश्न 1. ''किताबों की विद्या का ताप'' का आशय स्पश्ट करते हुए बताइए कि इसकी सामर्थ्य धनराम के पिता में क्यों नहीं थी?

उत्तरः– किताबों की विद्या का ताप से आशय है–पुस्तकें पढ़ाकर ज्ञानी अथवा भाक्ति से तेजस्वी बनाना। धनराम के पिता निर्धन थे इसलिए उनमें धनराम को आगे पढ़ाने की सामर्थ्य नहीं थी।

प्रश्न 2. गंगाराम के निधन के बाद गांव वालों को क्या याद नहीं रहा? और क्यों?

उत्तरः– शिल्पकार गंगाराम के निधन के बाद उसके पुत्र धनराम ने अपने पिता का पारंपरिक व्यवसाय अपना लिया था। इसलिए आसपास के गाँव वालों को गंगाराम का अभाव नहीं खला। उन्हें पता ही नहीं चला कि वे कब गंगाराम के आफर को धनराम का आफर कहने लगे।

प्रश्न 3. धनराम किस प्रकार एक निपुण शिल्पकार बन गया था?

उत्तरः– जैसे ही धनराम बड़ा हुआ उसके पिता जी ने उसे धौंकनी फूँकने, सान लगाने के कार्यों में लगाना आरंभ कर दिया। धीरे–धीरे उसे हथौड़े द्वारा धन कमाने की विद्या सिखा दी। इस प्रकार वह पिता के काम सीखकर निपुण शिल्पकार बन गया था।

4. मैं उँचाई के माप के चक्कर में नहीं हूँ। न इनसे होड़ लगाने के पक्ष में हूँ। वह एक बार लोसर में जो कर लिया सो बस है। इन उँचाइयों से होड़ लगाना मृत्यु है। हाँ, कभी–कभी उनका मान–मर्दन करना मर्द और औरत की शान है। मैं सोचता हूँ कि देश और दुनिया के मैदानों से और पहाड़ों से युवक–युवतियाँ आएँ और पहले तो स्वयं अपने अहंकार को गलाएँ फिर इन चोटियों के अहंकार को चूर करें। उस आनंद का अनुभव करें जो साहस और कूवत

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

से यौवन में ही प्राप्त होता है। अहंकार का ही मामला नहीं है। ये माने की चोटियाँ बूढ़े लामाओं के जाप से उदास हो गई हैं। युवक–युवतियाँ किलोल करें तो यह भी हर्षित हों। अभी तो इन पर स्पीति का आर्तनाद जमा हुआ है। वह इस युवा अट्टहास की गरमी से कुछ तो पिघले। यह एक युवा निमंत्रण है।

प्रश्न 1. स्पीति की पहाड़ियों की ऊँचाई के संबंध में लेखक के क्या विचार हैं?

उत्तरः– स्पीति की पहाड़ियों की ऊँचाई के संबंध में लेखक के विचार हैं कि उनकी ऊँचाई के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए क्योंकि इनकी ऊँचाई से होड़ लगाना मृत्यु है।

प्रश्न 2. लेखक किनका और क्यों आह्वान करता है?

उत्तरः– लेखक देश और दुनिया के युवक–युवतियों का आह्वान करता है कि वे स्पीति जैसे दुर्गम स्थान पर आएँ। पहले अपने अहंकार का त्याग करें और फिर इन चोटियों पर चढ़कर उनका मान–मर्दन करें।

प्रश्न 3. स्पीति की चोटियाँ क्यों उदास हो गई हैं? वे कैसे हर्शित हो सकती हैं?

उत्तरः– स्पीति की चोटियाँ बूढ़े लामाओं के जाप से उदास हो गई हैं। अगर युवक–युवतियाँ आकर किल्लोल करें तो ये हर्शित हो सकती हैं।

5. चित्रकला व्यवसाय नहीं, अंतरात्मा की पुकार है। इसे अपना सर्वस्व देकर ही कुछ ठोस परिणाम मिल पाते हैं। केवल ज़हरा ज़ाफरी को कार्य करने की ऐसी लगन मिली। वह पूरे समर्पण से दमोह शहर के आसपास के ग्रामीणों के साथ काम करती हैं। कल मैंने उन्हें फोन किया–यह जानने के लिए कि वह दमोह में क्या कर रही हैं। उन्हें बड़ी खुशी हुई कि मुझे सूर्यप्रकाश उस ग्रामीण स्त्री का पति, जो अपने पति का नाम नहीं ले रही थी का किस्सा याद है। मैंने धृष्टता से उन्हें बताया कि 'बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख।' मेरे मन में शायद युवा मित्रों को यह संदेश देने की कामना है कि कुछ घटने के इंतजार में हाथ पर हाथ धरे न बैठे रहो–खुद कुछ करो। ज़रा देखिए, अच्छे–खासे संपन्न परिवारों के बच्चे काम नहीं कर रहे, जबकि उनमें तमाम संभावनाएँ हैं। और यहाँ हम बेचैनी से भरे, काम किए जाते हैं। मैं बुखार से छटपटाता–सा, अपनी आत्मा, अपने चित्त को संतप्त किए रहता हूँ। मैं कुछ ऐसी बात कर रहा हूँ, जिसमें खामी लगती है। यह बहुत गज़ब की बात नहीं है, लेकिन मुझमें काम करने का संकल्प है। भगवद् गीता कहती है, ''जीवन में जो कुछ भी है, तनाव के कारण है।'

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

प्रश्न 1. लेखक के अनुसार चित्रकला क्या है और उसमें ठोस परिणाम कैसे मिल पाता है?

उत्तरः– लेखक के अनुसार चित्रकला व्यवसाय नहीं है। वह तो चित्रकार के हृदय की पुकार है। चित्रकार अपने भावों–विचारों को हृदय की आंतरिक अनुभूतियों को चित्रों में उकेरता है। चित्रकला में अपना सब कुछ अर्पित करने के बाद ठोस सफलता प्राप्त होती है।

प्रश्न 2. लेखक युवा मित्रों को क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तरः– लेखक यह संदेश देना चाहता है कि उन्हें विशेश अवसर की प्रतीक्षा में हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने की अपेक्षा स्वयं ही कुछ करना चाहिए क्योंकि खाली बैठे रहने से कभी भी काम नहीं चलता।

प्रश्न 3. जीवन–संबंध में भगवद् गीता का क्या संदेश है?

उत्तरः– जीवन के संबंध में भगवद् गीता का संदेश है कि जीवन में जो कुछ भी है वह तनाव के कारण है। इसलिए हमें तनाव से दूर रहना चाहिए।

गद्य पाठों की विशय–वस्तु पर आधारित बोधात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. ''नमक का दारोगा'' कहानी का नायक कौन है? उसकी चारित्रिक विशेशताएँ लिखिए।

उत्तरः– ''नमक का दारोगा'' कहानी का नायक मुंशी वंशीधर है, जिनकी चारित्रिक विशेशताएँ निम्नलिखित हैं–

- मुंशी वंशीधर सद्वृत्ति, अच्छाई और सत्य का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्ति थे।
- वे सुशिक्षित, धर्मनिश्ठ और ईमानदार थे।
- उनमें स्वाभिमान कूट–कूट कर भरा था।
- उनमें विनम्रता देखने को मिलती है। आलोपीदीन की सहृदयता को वे कृतज्ञता से स्वीकार कर लेते हैं।

प्रश्न 2. सत्यजित राय ने किसे अपनी खुशकिस्मती बताया है?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

उत्तरः– सत्यजित राय की फिल्म 'पथेर पांचाली' का निर्माण कार्य लगभग ढाई साल तक चला। उन्हें भय लगने लगा था कि कहीं अपू और दुर्गा की भूमिमा निभाने वाले बच्चे ज्यादा बड़े न हो जाएँ। यदि

वे ज्यादा बड़े हो गए तो वह फिल्म में जो दिखाना चाहते हैं, वह दिखाई न देगा। इसी प्रकार इंदिरा ठकुराइन की भूमिका निभाने वाली अस्सी वर्शीय चुन्नीबाला देवी भी ढाई साल तक जीवित रहीं और बच्चे भी अधिक बड़े नहीं हुए, लेखक ने इसे अपनी खुशकिस्मती बताया है।

प्रश्न 3. लार्ड कर्जन के जाने पर विशाद की जगह हर्श क्यों था?

उत्तरः– लार्ड कर्जन के वापस इंग्लैंड जाने पर भारतीय जनता में विशाद की जगह हर्श की भावना थी क्योंकि लार्ड कर्जन के भासन काल में भारतीय जनता और अधिक बेबस दुखी और लाचार हो गई थी। उसके आततायी रूप से हर भारतीय पीड़ित था। उसने आठ करोड़ भारतीय जनता की प्रार्थना ठुकराकर बंग–भंगकर देश में अशांति फैला दी थी। जिसको आने वाले कई सदियों तक भारतीय जन मानस भुला नहीं सका।

प्रश्न 4. मोहन गाँव की इन मान्यताओं से अपरिचित हो ऐसा संभव नहीं था–इस कथन में किन मान्यताओं की ओर संकेत किया गया है?

उत्तरः– इस कथन में गाँव की निम्नलिखित मान्यताओं की ओर संकेत किया गया है –

- ब्राम्हण टोले का शिल्पकार टोले में उठना बैठना नहीं होता था।
- काम–काज के लिए जाने पर भी खड़े–खड़े ही बातचीत निपटा ली जाती थी।
- ब्राम्हण टोले के लोगों को बैठने के लिए कहना उनकी मर्यादा के विरुद्ध समझा जाता था।
- निर्धनता के कारण गरीब लोगों को अपने पैतृक व्यवसाय को चुनने की विवशता थी।

प्रश्न 5. ''शिव का अट्टहास नहीं, हिम का आर्तनाद है''– से लेखक का क्या अभिप्राय है?

उत्तरः– इस कथन से लेखक का आशय है कि स्पीति की पहाड़ियाँ बहुत ऊँची, नंगी, विरान और भव्य हैं। इन चोटियों पर स्पीति के नर–नारियों की दुख–दर्द भरी आवाज जमी हुई है।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

इन ऊँची, नंगी और भव्य पहाड़ियों में लोगों के हित अथवा कल्याण का अट्टहास नहीं है अपितु हर ओर बर्फ का आर्तनाद है। चारों तरफ बर्फ के कारण ठिठुरन, जलन और पीड़ा है।

प्रश्न 6. संपादक रजनी का साथ किस प्रकार देता है?

उत्तरः– संपादक अमित के उदाहरण के आधार पर एक अच्छा सा लेख तैयार करके पी0टी0आई0 के द्वारा एक साथ सभी अखबारों के लिए प्रसारित करवा देता है। उसके साथ ही वह यह सूचना भी प्रकाशित करवाता है कि 25 तारीख को अभिभावकों की इस संबंध में एक मीटिंग होगी।

प्रश्न 7. जामुन का पेड़ कहानी के आधार पर कहानीकार के उद्देश्य को स्पश्ट कीजिए।

उत्तरः– जामुन का पेड़ लेखक की एक हास्य–व्यंग्य कहानी है जिसमें कार्यालयी कार्य–पद्धति की निरर्थकता के साथ–साथ व्यस्था के संवेदनशून्य और अमानवीय पक्ष को उजागर किया है। इसके अतिरिक्त एक दूसरे पर टालने की प्रवृत्ति और कार्यालयों के चक्कर में व्यर्थ समय बिताने की परंपरा को भी उजागर किया गया है।

प्रश्न 8. वर्तमान समय में किसानों की स्थिति किस सीमा तक बदली है?

उत्तरः– वर्तमान समय में किसानों की स्थिति में निरंतर परिवर्तन आ रहा है। अब उन्हें जमींदार, पूँजीपतियों के शिकंजे में नहीं फँसना। अब उन्हें बैंकों से आसान ब्याज पर कर्ज मिलता है। उन्हें उत्तम खाद बीज आधुनिक कृशियंत्र सिंचाई के साधन उपलब्ध हैं। परन्तु आज़ादी के पैंसठ वर्श बाद भी किसानों के हित को ध्यान में रखकर कोई ऐसी योजनाएँ नहीं बनाई गईं जिनसे किसान के जीवन में खुशहाली आ सके।

प्रश्न 9. लेखक की कला में कैसे निखार आया?

उत्तरः– लेखक को वेनिस अकादमी के प्रोफेसर लैंग हैमर ने काम के लिए अपना स्टूडियो दे दिया वहाँ सारे दिन चित्र बनाते और सायंकाल उन चित्रों को दिखाकर बारीकी से उनका विश्लेशण करते। लेखक के काम में उनकी रूचि बढ़ती गई जिसके परिणाम स्वरूप कला में भी निखार आता गया।

प्रश्न 10. वकील और भाहर की भीड़ समाज की किस सच्चाई को उजागर करते हैं?

उत्तरः– वकील न्यायिक व्यवस्था में व्याप्त भ्रश्टाचार के साथ–साथ सत्य को असत्य बनाने की सच्चाई को उजागर करते हैं। वकील इस सत्य को भी पुश्ट करते हैं कि धन के बल पर उन्हें

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

खरीदा जा सकता है। भाहर की भीड़ उन तमाशबीनों की तरह होती है जो भीड़ को देखकर साथ देते हैं और उन्हें जिस दिशा में हाँक दिया जाता है वह उसी ओर चल देती है।

www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com